चित्रःगूगल से साभार

जिंदगी के वास्ते

प्यास की बेचैनियां पर न था पानी नसीब
एक दरिया बह रहा बस तिश्नगी के वास्ते।

सिर्फ सूखे ठूंठ जैसी जिंदगी का क्या करें,
चाहते हैं हम हरापन जिंदगी के वास्ते।

धूप आंधी बारिशों की साजिशों को झेलना,
यूं बड़ी दुश्वारियां सब खिड़कियों के वास्ते।

दोस्ती भी, दुश्मनी भी जंग -ए-मैदान में,
हम लड़े थे हर किसी से रोशनी के वास्ते।

वो फ़कीरा मानता खुद को मसीहा वक्त का,
बांटता है नेमतें अच्छे दिनों के वास्ते।

वाई.वेद प्रकाश

जून2023 साहित्य रत्न वर्ष1 अंक2